www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिग्रहण सं........

दिनांक ....

अपने सांस्कृतिक गौरव को भूलें नहीं

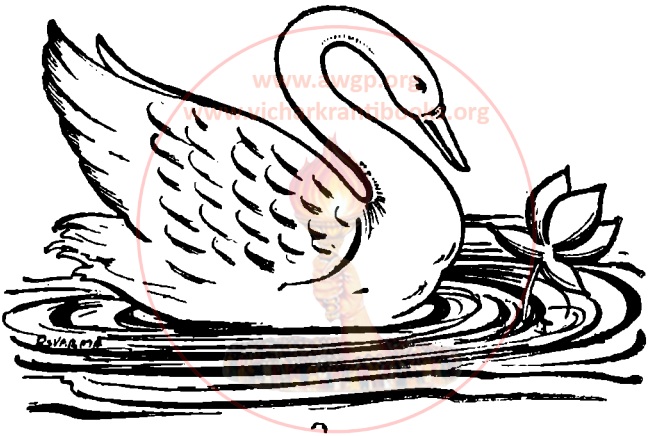

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने सांस्कृतिक गौरव को भूलें नहीं

संसार के कोने कोने में संस्कृति समृद्धि और व्यवस्था की स्थापना करने को हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य माना था। इसके लिए वे सबसे पहले आत्म निर्माण करते थे। अपने व्यक्तित्व को हर दृष्टि से उपरोक्त लक्ष्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त बनाते थे। जैसा खिलौना ढालना हो उसके अनुप साँचा तैयार करना पड़ता है। गुण कर्म स्वभाव की दृष्टि से आदर्श सिद्ध होने वाले व्यक्ति ही अपने चरित्र एवं चिन्तन की छाप दूसरों पर छोड़ सकते हैं। निकृष्ट स्तर के लोग उत्कृष्टता का उपदेश करें तो उपहास्पद विड़म्बनाही बन जाती है। लोग उन उपदेशों का पालन करना तो दूर उलटे उस उपदेशक की तरह उसके उपदेशों, प्रतिवादों को भी दिल्लगी का बात समझते है। यह तथ्य प्राचीन काल में भले प्रकार समझ लिया गया था। अस्तु यहां के नर-रत्न अपने आपको तप, साधना, संयम की अग्नि में तपाकर खरा सोना बनाते थे और विद्या प्रतिभा एवं शालीनता के लिए घोर परिश्रम करते थे।

आत्म समर्पण और लोक मंगल यों दो कार्य दीखते हैं पर वस्तुतः वे दोनों परस्पर अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। जो आत्म समर्पण करेगा उसकी सुविकसित महानता लोक-कल्याण के लिए अग्रसर हुए बिना चैन से बैठ ही न सकेगी। और जो सच्चे मन से जन-कल्याण की परमार्थ सेवा साधना करना चाहता हो उसे वह कार्य आत्मोत्कर्ष के लिए उग्र प्रयास करते हुए आरम्भ करना होगा। वस्तुतः आत्मोत्कर्ष और लोक-कल्याण महान जीवन लक्ष्य रूपी रथ के दो पहिये हैं जिनके सही होने पर ही अभीष्ट दिशा में गतिशीलता उत्पन्न होती है।

भारतीय जीवन का आदर्श और उसका क्रिया-कलाप बार-बार कसौटियों पर कसने से यही दो लक्ष्य सामने आते हैं, जिनके लिए इस देशके महान नागरिक निरन्तर घोर प्रयत्न करते रहे। उनकी महत्वाकांक्षाएं इन्हीं दो लक्ष्यों के इर्द-गिर्द घूमती थीं। फलतः प्रगति भी आशातीत हुई। भारत स्वयंतो समुन्नत रहा ही है उसने अन्यत्र भी अपनी विभूतियाँ बिखेरी और विश्वमानव की गौरव-गरिमा में चार चाँद लगाये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब से संसार में लिखित न सही अलिखित इतिहास के सूत्र मिलते हैं तबसे ऐसे ही प्रमाण सम्मुख आते हैं जिनमें भारतीय नर रत्नों द्वारा व्यापक क्षेत्र में विविध विधि सेवा साधन के सत्कृत्य प्रस्तुत किये जाते रहे। उन दिनों वस्तुतः समस्त संसार ही भारत का अपना कार्यक्षेत्र था। रात्रि विश्राम के लिए या अण्डे देने के लिए जिस प्रकार पक्षी किसी पेड़ पर घोंसला बना लेते हैं और थकान दूर करके फिर उन्मुक्त आकाश में उड़ते हैं, ठीक उसी प्रकार यहां नई पीढ़ियों के प्रजनन प्रशिक्षण के सुविधा साधन भर जुटाये जाते थे। थोड़े लोग निर्वाह साधने की व्यवस्था भी करते थे। इससे आगे जो जन-बल बुद्धि बल धन-बल बच जाता था उसे विश्व-कल्याण के एक मात्र प्रयोजन के लिए ह नियोजित किया जाता था। हमारे देशमें यही परम्परा थी। हर भावनाशीलकी चिन्तन और कर्तृत्व इसी दिशा में गतिशील था। परिणाम प्रत्यक्ष है। भारत के देवमानव अपने देश में सतयुगी स्वर्गीय परिस्थितियाँ बनाये रहे, साथ ही विभूतियों के अवशेष सुदूर क्षेत्रों में बिखेर कर मानवता का आविस्मरणीय कीर्तिमान स्थापित करते रहे।

इसके प्रमाण जिस भूखण्ड में ढूँढ़े जायें मिल जायेंगे। पौराणिक कथा प्रसंगों से इस तथ्य का प्रतिपादन भली प्रकार होता है। किसी भी देश की पौराणिक गाथाओं, लोककथाओं और किम्बदन्तियों का विश्लेषण किया जाय तो निष्कर्ष एक ही निकलेगा कि भारतभूमि के निवासी देव पुरुष उस क्षेत्र में पहुँच कर ऐसी स्थापनाएँ करते रहे जिनसे दुख की दयनीयता का सुख सौभाग्य में परिणत हो सकना संभव हुआ। दैवी सहायता के रूप में भारत से प्रकाश एवं सहयोग का आशातीत अनुदान प्राप्त हुआ।

जबसे भग्नावशेष, वस्तु प्रमाण आदि के प्रमाण मिलने आरंभ हुए हैं तब से उन भारतीय गौरव गाथाओं की, प्रचलित दन्तकथाओं की और भी अधिक पुष्टि होती गई है। उसके उपरान्त लिखित इतिहास का समय आता है। भाषा और लिपि का विकास विस्तार होने के उपरान्त संसार में लेखन कार्य आरम्भ हुआ और उसमें तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन किया गया। उसमें से असंख्य लेख प्रमाण नष्ट होते गये। उनमें से जहाँ जहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो प्रामण मिले उनमें सब की दिशा एक ही है कि सृजन का नेतृत्व करने वाले भूदेव उस भूमि को समुन्नत बनाने में अधिक परिश्रम करते रहे। उस क्षेत्र की विकृतियों के माथ प्राण पण से जूझे। शिल—लेख काष्ठ फलका लेख, चर्म पट्ट लेख, भोज पत्र लेख, भित्ति लेख आदि के प्राचीनतम प्रमाण जहां भी मिले है वहीं से भारतीय गरिमा को प्रमामाणिकता ही सिद्ध हुई है। वस्तुतः सभ्यता की जन्मदात्री यह भारत भूमि ही है और यहीं से उदय हुआ सर्वतोमुखी उत्कर्ष का सूर्य समस्त विश्व में अपनी प्रकाश को किरणें फैलाता चला गया। यह क्रम हजारों लाखों वर्षों तक चला गया। पीछे पतन और पराभव का युग आया। इस देश के निवासियों में स्वार्थ बुद्धि जागी—व्यक्तिवाद पनपा निजी सुख सुविधाओं के बढाने की बात सूझी—विलास-लिप्सा में मन डोला, अहंकार की तृप्ति के लिए संग्रह और वर्चस्व प्रदर्शन की दुर्बुद्धि जागी। लोग सामूहिक स्वार्थ की उपेक्षा करके व्यक्तिगत वैभव एवं सुख साधन बढ़ाने की ओर मुड़े जहाँ अन्तः प्रवृतियाँ पतनोन्मुखी होंगी वहाँ बहिरंग क्रिया-कलाप में निकृष्टता और दुष्टता की मात्रा बढ़ेगी। कुकृत्य होंगे और गुत्थियाँ उलझेंगी। संकटों और विग्रहों की बाढ़ आयेगी ! उत्कृष्टत चिन्तन की परम्पराओं वाला भारत जब संकीर्ण स्वार्थपरता के गर्त में गिरा तो उसकी स्थिति पतितों जैसी दयनीय होती चली गई।

प्राचीन भारत की समस्त गौरवगरिमा का केन्द्र—बिन्दु एक ही था। कि उस समय का मनुष्य संकीर्ण स्वार्थपरता की सड़ाँद में मरने वाली मनः स्थिति से घोर घृणा करता था। उसके सामने ऊँचा लक्ष्य रहता था और ऊँचा आदर्श। अपने निकृष्ट अहंम् की पूर्ति तक सीमित रहने के लिए कोई घिनौना व्यक्ति ही तयार होता था। पेट और प्रजनन भर के लिए जिसने मानव जीवन का बहुमूल्य अवसर गँवा दिया उसे आत्म-प्रताड़ना की विज्ञ भर्त्सना की इतनी करारी मार सहनी पड़ती थी कि लप्सा-लालसा में जो हाथ लगता था वह नगण्य ही रह जाता था अस्तु किसी को भी अमीर या बड़ा आदमी बनने को हविस नहीं उठती थी। हर कोई उदार महान व्यापक बन कर जीवन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आतुर रहता था। उसकी गतिवि-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धियां योजनाएँ आकांक्षाऐं विचारणाएँ एक ही केन्द्र के इर्दगिर्द घूमती रहती थी कि वह अपनी आत्मीयता एवं ममता को अधिकाधिक व्यापक कैसे बनाये सच्चा ईश्वर भक्त सच्चा अध्यात्म वादी सच्चा मनुष्य कैसे कहलाये ? और उस जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए त्याग–बलिदान की सेवा साधना में संलग्न होने के लिए कितना बढ़ चढ़ कर दुस्साहस प्रस्तुत करे । अपने क्रिया-कलापों को कितना आदर्श–कितना अनुकरणीय बनाये । पतन, पीड़ा और पिछड़ेपन से जूझते हुए कितने प्रखर शौर्य साहस का परिचय दे । अपनेपन का क्षेत्र कितना व्यापक और विस्तृत बनाये । जब अन्तःकरण में इसी स्तर के उफान उठेंगे तो स्वाभावतः मनुष्य को उसी राह पर चलना पड़ेगा जिससे मनुष्यता गौरवान्वित होती हो । स्पष्ट है जहां उत्कृष्टता होगी वहाँ सम्पन्नता की प्रगति की कभी कमी नहीं रहेगी । ऐसे व्यक्तित्व जहां भी रहते हैं वहाँ सम्पत्तियों और विभूतियों का इतना बाहुल्य रहता है कि उस समस्त क्षेत्र में वैभव बिखरा पड़ा रहे और उसे समस्त भूमंडल में बिखेर कर सुख शान्ति का अजस्र अनुदान दिया जा सके ।

यही है वह मार्ग जिस पर हमारे पूर्वज चले थे । यही थी वह दिशा जिस पर उनके चरण अनवरत गति से बढ़े थे । यही था वह लक्ष्य जिसकी पूर्ति को उन्होने जीवन की सफलता माना था । इसी स्तर के क्रिया कलापों में उन्हें संतोष होता था । ऐसे ही कृत्यों में संलग्न रहने में वे अपने श्रम और समय को धन्य मानते थे । फलतः उनका समग्र व्यक्तित्व देवोपम बनता था । वे स्वयं स्वर्गीय शान्ति का हर घड़ी आनन्द लेते थे । उनके कुटुम्बी स्नेहसिक्त वातावरण में परिपूर्ण वैभव जितना उल्लास अनुभव करते थे । उनका समस्त प्रभाव क्षेत्र आदर्शवादिता की सुगन्ध से भरा रहता था । वे चन्दन वृक्ष जैसा आत्म विकास करते थे और अपने समीपवर्ती क्षेत्र में उगे हुए झाड़-झंखाड़ों को अपने सरीखे बनाने की मंगलमयी सफलता प्राप्त करते थे । यही था हमारे पूर्वजों का जीवन लक्ष्य, इसी के लिए समर्पित था उनका चिन्तन और कर्तृत्व आन्तरिक महानता को बढ़ाकर उन्होंने अपने देश और धर्म को गौरवान्वित किया था और इसी उपलब्धि का यत्किंचित प्रसाद पाकर समग्र मानवता को,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

समस्त विश्व वसुधा को समुन्नत एवं सुविकसित होने का अवसर दिया था।

हमें इन विश्व संकट के क्षणों में विशेष उत्तरदायित्वों का वहन करना है। अन्धकार के निवारण की जिम्मेदारी सूर्य के कन्धों पर है। यदि वह उससे इनकार करे तो फिर सौर-मण्डलके ग्रह उपग्रहों का सर्वनाश ही समझनाचाहिए

अपनी प्राचीन गौरव-गरिमा को प्राप्त करना, पूर्वजों की कीर्ति को धवल बनाये रहना हमारा परम पवित्र कर्तव्य है। आज जिस पथ-भ्रष्टता को अपनाकर हम पतन के गर्त में गिर पड़े हैं उससे निकलने का उत्कृष्ट प्रयास हमें करना चाहिए। प्रगति के पथ पर संसार के अनेक देश आगे निकल गये—हम पिछड़ी स्थिति में ही पड़े हैं। इस आत्म ग्लानि की प्रताड़ना हमें अनुभव करनी चाहिए और कृमि कीटकों की तरह पेट-प्रजनन के निमित्त किया जाने वाला निकृष्ट जीवन जीने से इन्कार कर देना चाहिए।

हम व्यक्तिगत रूप से अधिकाधिक प्रगति करें और सामाजिक रूप से अधिकाधिक समुन्नत होने का प्रयास, करें, पर साथ ही यह भी ध्यान रखें कि उपलब्ध विभूतियों एवं सम्पदाओं का उपयोग संकीर्ण स्वार्थपरता के सीमा बन्धनों में ही अवरुद्ध न कर दिया जाय। पिछड़ापन जहां कहीं भी दिखाई पड़े हम वहीं दौड़ जायें और प्रगति का प्रकाश इस प्रकार वितरित करें कि किसी भी कोने में पतन का अन्धकार छिपा न रहने पाये।

हम सदा से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श को अपनाये रहे हैं। विश्व-मानव को अपना विस्तार क्षेत्र माना है। अपनेपन की सीमा निज के शरीर परिवार तक अवरुद्ध नहीं करनी चाहिए वरन् उन्हें इतना व्यापक बनाना चाहिए कि भारत भूमि का कोना-कोना उसके प्रकाश से आलोकित हो उठे! समस्त विश्व को उसकी ऊष्मा प्राप्त करने का अवसर मिले।

भूतकाल में आत्मिक दृष्टि से उच्च स्तर पर पहुँचा हुआ भारत अपनी गौरव-गरिमा विनिर्मित करने में और समस्त विश्व को अजस्र अनुदानों से भर देने में समर्थ हुआ था। वही राजमार्ग फिर हमारा आह्वान करता है। संसार में धन, विज्ञान एवं बुद्धिबल भले ही बढ़ गया हो, तथाकथित प्रगतिशील लोग सुविधा साधनों से भले ही पट गये हों, पर उनका आध्यात्मिक पिछड़ापन अभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी उन्हें घोर अशान्ति में घिरी हुई उलझनों से जकड़े हुए है। निर्धनों, अशिक्षितों और अस्वस्थों से भी कहीं अधिक गई गुजरी मनः स्थिति में इन उन्नतिशील देशों को रहना पड़ता है। उनके सिर चढ़ी हुई दुष्प्रवृतियां तो उन्हें भीतर ही भीतर खोखला किये दे रही हैं।

इस स्थिति में भारत अपनी प्राचीन गौरव-गरिमा को विकसित करके न केवल अपना पिछड़ापन दूर कर सकता है वरन् समस्तसंसार को इतना अधिक आत्मिक अनुदान दे सकता है, जिसकी तुलना में उनकी अब तक की समस्त भौतिक प्रगति को तुच्छ ठहराया जा सके।

सर्वग्रासी वर्तमान विश्व संकट के क्षणों में हमें अपनी गतिविधियों का निर्धारण फिर से करना चाहिए। अपनी चिन्तन दिशा को फिर से परिष्कृत करना चाहिए, ताकि अपना ही नहीं समस्त संसार का सर्वतोमुखी कल्याण कर सकने में समर्थ हो सकें।

भूतकाल में हमारे पूर्वज समस्त विश्व का मार्ग-दर्शन करने में किस प्रकार सफल हो सके—इसके लिए उन्होंने अपने में किस स्तर की क्षमता एवं आदर्शवादिता को विकसित किया, यही इस रचना का मूल उद्देश्य है। विश्व-सेवा की दिशा में किये गये पूर्वजों के महान प्रयास हमारे लिए प्रेरक पथ-प्रदर्शक बन सकें इसीलिए इतिहास के कुछ महत्व पूर्ण पृष्ठों को पढ़ना तथा अपनी सांस्कृतिक गरिमा को समझना आवश्यक है।

प्राचीन काल में यातायात आज की तरह सरल न था। तब रेल मोटर, आदि का नाम न था। न तो बढ़िया सड़कें थीं और न नदियों पर सुदृढ़ पुलो की व्यवस्था थी। ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़कें जगह-जगह नदी नालों के अवरोध सुदूर क्षेत्र में फैले सघन वन, जल और वनस्पति से रहित मरुस्थल, सिंह,व्याघ्र सर्प आदि हिंस्र जन्तुओं के आक्रमण—डाकुओं का बाहुल्य—हिमाच्छादित गिरि शृंग ग्रीष्म में तपता भूतल—कीचड़ दलदल की सड़ी जल-वायु-भोजन, जल और निवास सम्बन्धी घोर असुविधा—भाषा भिन्नता के कारण दूर देश के लोगों से विचार विनिमय की कठिनाई—स्थानीय प्रथा परम्परा से अपरिचित होने के कारण विग्रह की संभावना—अजनबी लोग अपरिचित क्षेत्र—जैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असंख्य कठिनाइयों के कारण उन दिनों लम्बी यात्राऐं करना एक दुस्साहस था। उस ओर कदम बढ़ाने वाले हथेली पर जान रख कर ही उस प्रकार का निर्णय करते थे ·

ऐसी साहसिक यात्राएँ कोई स्वार्थों को लेकर नहीं कर सकता। स्वार्थ तो तात्कालिक लाभ खोजता है। जिसमें कष्ट अधिक सुख कम हो, उसे कभी कोई स्वार्थ परायण व्यक्ति स्वीकार न करेगा। क्षुधार्त या आपत्ति ग्रस्त तो जीवन रक्षा के लिए दूर देशों में भी जा सकता है,पर जिस देश में सुखसुविधाओं का बहुल्य हो वहाँ के लोग उस आनन्दी जीवन को छोड़कर प्राण संकट में डालने वाली यात्रा के लिए कटिबद्ध हों तो समझना चाहिए कि उन्हें कोई अत्यन्त उच्चकोटि की अन्तः प्रेरणा ने ही आन्दोलित किया होगा। सचमुचऐसा ही होता था। लोक-मंगल के लिए अधिकाधिक तप-त्याग कर सकने योग्य साहसी आत्मबल—यही तो अध्यात्म साधना की एक मात्र उपलब्धि है। व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता एवं महानता जब प्रखर परिपक्व हो जाती है तो वे जन कल्याण के लिए बढ़े-चढ़े दुस्साहसी पुरुषार्थ करने के लिए मचलते हैं। इसी छटपटाहट से भारतीय महामानवोंका अन्तःकरण उल्लसित रहता था और वही तड़पन विश्व कल्याण के निमित्त घर छोड़ कर सुदूर देशों के लिए महाप्रयाण के रूप में फलित होती थी। यही थीं प्राचीन काल की साधनाएँ जिन्हें जिन्हें यहाँ के आस्था क्षेत्र में अत्यन्त गहरा और अत्यन्त सम्मानास्पद गौरव प्रदान किया गया था। संस्कृति के प्रचारक अपनी आँखें और दूसरों की आंखों में एक प्रकार से बलिदानी शहीद स्तर के माने जाते थे। उनका कर्तृत्व कितने लोगों का कितना उच्चस्तरीय हित साधन करेगा इसका चित्र जब कभी किसी की आंखों के सामने प्रस्तुत होता था वह उनके आगे सहज ही श्रद्धावनत खड़ा होता था। उन दिनों वे पृथ्वी पर विचरण करने वाले स्वर्ग लोक के देवता ही माने जाते थे उनका दर्शन, सान्निध्य प्राप्त करके एवं उन्हें सहयोग देकर सामान्य नागरिक कृतकृत्य हुए बिना नहीं रहता था।

क्र. २१६ प्र. युग निर्माण योजना मु. युग निर्माण प्रेस मथुरा मूल्य ४० पैसे.

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org